UNIVERSITY OF CAMBRIDGE

AET2
Asian and Middle Eastern Studies Tripos, Part II

Thursday 30 May 2019 9.00 to 12.00 pm

Paper MES43

Intermediate Hindi Language

*Answer **all** questions.*

*Write your number **not** your name on the cover sheet of **each** answer booklet.*

STATIONERY REQUIREMENTS
20 page answer booklet
Rough Work Pad

SPECIAL REQUIREMENTS TO BE SUPPLIED FOR THIS EXAMINATION
None

You may not start to read the questions printed on the subsequent pages of this question paper until instructed to do so.

1. **Translate into English**.

शहर किसी का भी हो वह हमें पूरी ज़िन्दगी प्यारा लगता है। बार बार लौटकर अपने शहर आने का आकर्षण हम रोक नहीं पाते। कहीं भी रहें। देश दुनिया टहल घूम आएं, लेकिन हर किसी की चाहत होती है कि अपने शहर लौट जाऊं जब अंतिम समय आए। लेकिन वैश्विक नागरिक जब से हुए हैं तब से यह संभव नहीं। पैदा होते हैं कहीं, पलते-बढ़ते कहीं हैं और रोज़गार की तलाश में हमारा शहर पीछे छूटता जाता है। इतना पीछे छूट जाता है कि फिर हम अपने शहर पहुँच नहीं पाते। इतना तो ज़रूर हम करते हैं कि उन शहरों की यादों को समेटने की पूरी कोशिश करते हैं जब भी हमें अपने शहर लौटने का मौका मिलता है। चाहे वह लेखक हों, कवि हों, पत्रकार, व्यापारी, डॉक्टर सब के सब अपने शहर से जुड़े होते हैं। बातों ही बातों में लिखने में या कहने में हमारा शहर न चाहते हुए भी ज़िंदा हो जाता है। वह तस्लीमा नसरीन हों, सलमान रूश्दी हों, कुलदीप नैय्यर हों, आदि। सब के सब ज़िन्दगीभर अपने शहर लौटने की उम्मीद लिए यहां से गए। तस्लीमा नसरीन का अधिकांश लेखन जिसमें अपने वतन को ढूंढ़ते हुए बातें लिखी हुई हैं। वहीं कुलदीप नैय्यर भी कई बार कह चुके कि वो अपने देश जहां जन्मे वहां जाना चाहते थे। गए भी, लेकिन सब कुछ बदला बदला सा मंज़र मिला। शायद अंदर से निराश भी हुए। यहां पर यह उम्मीद कि जिस शहर को आप छोड़कर आए थे। वह शहर बरसों बाद भी वैसा का वैसा ही रहे। यह संभव नहीं। बल्कि यह अपेक्षा ही अपने आप में ग़लत है। विकास की गति में आप ही का शहर क्यों पीछे रहे।

(18 Marks)

2. Translate into English.

अभी पिछले वर्ष मेरे निवास पर सुखदेव सिंह त्यागी का पोता सुरेन्द्र आया था, किसी इन्टरव्यू के सिलसिले में। गाँव से मेरा पता लेकर आया था। रात में रुका। मेरी पत्नी ने उसे यथासंभव अच्छा खाना खिलाया। खाना खाते-खाते वह बोला, भाभी जी, आपके हाथ का खाना तो बहुत स्वादिष्ट है। हमारे घर में तो कोई भी ऐसा खाना नहीं बना सकता।

उसकी बात सुनकर मेरी पत्नी तो खुश हुई, लेकिन मैं काफी देर विचलित रहा। बचपन की घटनाएँ स्मृति का दरवाज़ा खटखटाने लगीं।

सुरेन्द्र तब पैदा भी नहीं हुआ था। उसकी बड़ी बुआ यानी सुखदेव सिंह त्यागी की लड़की की शादी थी। उनके यहाँ मेरी माँ सफाई करती थी।

शादी से दस-बारह दिन पहले से माँ-पिता जी ने सुखदेव सिंह त्यागी के घर-आँगन से लेकर बाहर तक के अनेक काम किये थे। बेटी की शादी का मतलब गाँव भर की इज़्जत का सवाल था। कहीं कोई कमी रह जाये। गाँव भर से चारपाइयाँ ढो-ढो कर जनवासे में इकट्ठी की थीं पिताजी ने।

बारात खाना खा रही थी। माँ टोकरा लिये दरवाज़े से बाहर बैठी थी। मैं और मेरी छोटी बहन माया माँ से सिमटे बैठे थे। इस उम्मीद में कि भीतर से जिन मिठाइयों और पकवानों की महक आ रही है, वे हमें भी खाने को मिलेंगे।

(17 Marks)

(TURN OVER)

3. **Translate into Hindi**.

As Mitra and Citra travelled along, they saw an old man leading a black goat. "Sir", Mitra asked him, "where are you going, and whose goat is this?" The old man looked in the direction of the two boys, and, shedding tears, told them his story. "My name is Puskara, good sirs," he said. "Once like you I was young and strong, but because of a curse I am now weak. I fear that I shall die soon. This goat is my companion and my only friend. But though he is dear to me I have to sell him, for I have no money. What is the point of such a wretched life? When he heard this, Citra, his heart full of pity, quickly ran home, untied his mother's cow and brought it to where the old man was. "Give me the goat and take this cow," he said. "By drinking her milk you will become well, and by selling her you will become rich." The old man, weeping with joy, took the cow and went away. The two boys ran home happily. At Mitra's house his father asked him, "Have you seen a goat in the village today? My black one has been taken by some wicked thief."

(18 Marks)

4. **Translate into Hindi**.

I should have been writing this essay in Hindi. Not just this essay, but several others – and perhaps, poems, stories, book reviews, too. Many years ago, in a fit of joyous exuberance, I actually wrote several pages of my daily journal in Hindi. It happened after the language suddenly sprung to life in my inner being.

I was doing a pre-university course at the Madras Christian College. My second language option was Hindi. We had two teachers, whose names, unfortunately, elude me just now. However, I remember them very well. The older of the two was a white-haired man, with two protruding teeth. He was a Tamil Brahmin, probably an *Aiyar*, who had been closely associated with the *Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha*. He spoke Hindi with a South Indian accent. He wore only khadi clothes. One's teachers often make unwitting prophecies in the passing which, in an uncanny manner, actually come true in the most unexpected ways years later. It was this Hindi professor who said that I too would start wearing khadi one day.

Fond of literature as I was, I began to warm up to the Hindi course that we were taught. Because the board was Madras pre-university, I thought the Hindi syllabus was rather easy. It consisted of an anthology of poetry, some short stories, and an abridged version of Premchand's Godaan.

(17 Marks)

END OF PAPER